Scholarly Publication

सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी में उच्चारण एवं वर्तनी सम्बंधी त्रुटियों का अध्ययन

प्रियंका कुमारी शर्मा[1] | डॉ. गौरव सिंह[1,*]

[1]कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान (भारत)

Corresponding author: pathenagaurav@gmail.com

शोध सारः भाषा मानवीय जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। भाषा द्वारा ही किसी जाति या समाज का ज्ञान सुरक्षित रहता है। यह सर्वविदित है कि व्यक्ति का विकास भाषा के बिना असंभव है। भाषा ज्ञान के बिना व्यक्ति कुंठित हो जाता है। भाषा अभिव्यक्ति एवं विचार विनिमय का मानव निर्मित सफल साधन है। यह पैतृक सम्पति न होकर अर्जित सम्पति है जिसे बालक अनुकरण तथा श्रयास द्वारा ग्रहण करने की चेष्टा करता है। इस तरह वह जब कुछ और बड़ा होता है तो उसके सामाजिक दायरे और परिवेश में परिवार के बाहर मोहल्ला गाँव विद्यालय तथा क्षेत्र विशेष का भी परिवेश शामिल हो जाता है। बालक अनायस ही अनुकरण द्वारा उस भाषा को सीखने के लिए बाध्य हो जाता है।

कीवर्डः भाषा अभिव्यक्ति, अनुकरण, वर्तनी, उच्चारण, सम्प्रेषण

प्रस्तावनाः

शिक्षा वह प्रकाशपुंज है जो अज्ञान रूपी तमस को दूर हटाती है तथा ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है। शिक्षा वह मार्गदर्शक है जो भटके हुए राही को सही राह दिखलाती है। शिक्षा द्वारा ही हमारी कीर्ति चारो ओर प्रसारित होती है। तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं का समाधान करने में सहायक है। शिक्षा सभ्य जीवन की आधारशिला है। सभ्य जगत की भव्य और आकर्षक दिखने वाली समस्त वस्तुएँ शिक्षा की ही देन है [1]। शिक्षा ही मानव की उन्नति एवं सभ्यता की प्रगति का एकमात्र स्त्रोत है। शिक्षा देने का कार्य शिक्षक का है जिसे समाज का निर्माता कहा जाता है। जो राष्ट्र के भावी कर्णधारो के जीवन का निर्माण करता है। शिक्षा का प्रादुर्भाव मानवीय चेतना के प्रारम्भ से माना जाता है [1]। चेतन अवस्था प्राप्त करने के समय से ही मानव अपनी संतत्ति को शिक्षा देता आया है। और इसके इतिहास का आंरभ भी यही से समझना चाहिए। शिक्षा प्राणिशास्त्र की सहज प्रक्रिया है जिससे मानव अपनी चिंतन और तर्क शक्ति को प्राप्त करता है।

ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसे वाग्देवी ने अपनी कृपा दृष्टि से कृतकृत्य किया है। तथा भाषा रूपी उपहार दिया है। भाषा के कारण ही मनुष्य सृष्टि के अन्य जीवधारियो में सर्वोत्तम है। भाषा का आविष्कारक मनुष्य ही है। भाषा सदैव से ही मानव की सहचरी रही है। यह प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। समस्त प्राणिजगत में मनुष्य को ही केवल भाषा का अमूल्य वरदान प्राप्त है। भाषा प्रकृति का वरदान है अथवा मानवीय कलाकृति अथवा ईश्वर प्रदत्त शक्ति है, यह वैज्ञानिको के लिए आज तक रहस्य अथवा शात्त्रार्थ का विषय बना हुआ है। प्राचीन भारतीय विचारक भी मानते है कि ईश्वर ने ऋषियों को वैदिक भाषा का ज्ञान प्रदान किया है।

मानव विचारशील प्राणी है, उसके अंतर में जो विचार तथा भावना उत्पन्न होती है [2]। उन्हें व्यक्त करने के लिए एक माध्यम का होना अनिवार्य है अतः हम भाषा के माध्यम से ही दूसरों से सम्पर्क स्थापित करते है। तथा भाषा के माध्यम से ही विचारों का आदान प्रदान महत्वपूर्ण है। विचारों को हम भाषा, चित्रकला, व्यवहार तथा संकेतों द्वारा व्यक्त करते हैं। शिक्षा का सर्वाधिक प्रयुक्त साधन भाषा है। भाषा

Received: 25 December 2024 | **Revised:** 08 January 2025
Accepted: 11 January 2025 | **Published Online:** 13 January 2025

बालक के जीवन से धनिष्ठ संबंध रखती है। इसके अभाव में बालकों का शब्दकोश एवं अभिव्यक्ति सीमित रह जाती है। इसके फलस्वरूप वे एक दूसरे के विचारों को समझने में असमर्थ रहते हैं। अतः प्रारम्भ से ही बालक की भाषा की नीवं सुदृढ होनी चाहिए। बालक विद्यालय में जो शिक्षा ग्रहण करता है, उसका आधार उसकी भाषा क्षमता पर ही निर्भर है।

सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमिः

भाषा मानव की प्रगति में विशेष रूप से सहायक रही है। हमारे पूर्वजों के सारे अनुभव हमें भाषा के माध्यम से ही प्राप्त हुए हैं। हमारे सभी शास्त्र और उनसे होने वाला सम्पूर्ण लाभ भाषा का ही परिणाम है। यह भाषा विभिन्न तरीकों से वार्तालाप में प्रयुक्त होती है। हमारे राष्ट्र में हिन्दी भाषा का प्रयोग राष्ट्रभाषा के रूप में किया जाता है। हिन्दी भाषा में उच्चारण एवं वर्तनी सम्बंधी त्रुटियों के कारण कई बार अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। यदि इसका निराकरण उच्च प्राथमिक स्तर पर ही किया जाये तो यह अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

भाषा की अवधारणाः

भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है [3]। भाषा सम्प्रेषण का एक माध्यम है। भाषा मनुष्य की एक विशिष्ट योग्यता है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी बात एवं विचार दूसरों तक प्रेषित करता है। भाषा एवं सम्प्रेषण दोनो का ही सम्प्रेषण हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। समाज की संरचना, संस्कृति का निर्माण तथा मनुष्य की सभ्यता आदि सब हमारी भाषा पर आधारित है। भाषा का अभाव प्राणी को पंग बना देता है। भाषा व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने का कार्य करती है। हमारा जिस वातावरण में पालन पोषण होता है। हम जिन परिस्थितियो में रहते हैं, जिस वर्ग स्तर से संबंधित होते हैं, उनका प्रभाव हमारे अवचेतन, मस्तिष्क पर पड़ता है और जब हम किसी उद्देलित आक्रमण को स्पष्ट करने बैठते हैं तो उन प्रभावों को अनायास ही साथ मिलता चला जाता है। उनके लिए हम किसी भी तरह का प्रयत्न नही करते हैं। इसे ही भाषा माना जाता है।

भाषा का अर्थ एवं परिभाषाः

बोलना या "कहना" अर्थात भाषा वह जिसे बोला जाए। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते है तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।

क्रोचे के अनुसारः "भाषा अभिव्यक्ति की दुष्टि से उच्चारित एवं सीमित ध्वनियों का संगठन है।"

प्लेटों के अनुसारः "भाषा आत्मा की मृक या अध्वन्यात्यक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्यक होकर ओष्ठो पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"

समस्या का औचित्यः

शिक्षा एवं समाज के बदलते परिवेश में विद्यार्थी का जीवन निर्माण उच्च होना चाहिए। विद्यार्थी राष्ट्र के भविष्य है एवं उनके जीवन की नींव प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा रखी जाती है। शिक्षकों द्वारा छात्रों को विचार विनिमय हेतु प्रारम्भिक स्तर पर भाषा का जिस रूप में ज्ञान प्रदान किया जाता है विद्यार्थी उसी के अनुरूप भाषा के उच्चारण एवं वर्तनी का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

शोध समस्या का अभिकथनः

सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी में उच्चारण एवं वर्तनी सम्बंधी त्रुटियों का अध्ययन

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का परिभाषीकरणः

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्न सम्प्रत्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया है जिनकी व्याख्या निम्न प्रकार की जा सकती हैः

सरकारी विद्यालयः वह विद्यालय जिनका संचालन कार्य सरकार द्वारा किया जाता है तथा जिन पर पूर्ण हस्तक्षेप सरकार का ही होता है वह सरकारी विद्यालय कहलाते हैं।

उच्च प्राथमिक स्तरः विद्यालय में विधमान वह स्तर जिसमे कक्षा 6,7,8 को शामिल किया जाता है उच्च प्राथमिक स्तर माना जाता है।

विद्यार्थीः विद्यालय में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं को विद्यार्थी माना जाता है।

उच्चारणः भाषा का वह रूप जो मौखिक रूप में निकलता है, वह उच्चारण कहलाता है अर्थात सम्प्रेषण के लिए भाषा का मौखिक स्वरूप उच्चारण कहलाता है।

वर्तनीः लिखित अभिव्यक्ति के लिए अक्षर जिस प्रकार लिखे जाते है उसे लिपी कहते हैं। तथा लिपी का व्यवस्थाबद्ध स्वरूप वर्तनी कहलाता है। अर्थात सम्प्रेषण हेतु भाषा का लिखित या लिपीबद्ध रूप वर्तनी कहलाती है।

शोध समस्या के उद्देश्यः

1. सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विधार्थियो की हिन्दी में उच्चारण एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन करना।
2. सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के आवासीय एवं गैर– आवासीय विद्यार्थियों के हिन्दी में उच्चारण एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन करना।

शोध समस्या की परिकल्पनाः

H_{01}: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

H_{02}: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन की त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध उपकरणः

सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी में उच्चारण एवं वर्तनी सम्बंधी त्रुटियों से संबंधित प्रश्नावली – स्वनिर्मित।

शोध समस्या का परिसीमनः

प्रस्तुत शोधकार्य का अध्ययन क्षेत्र अधिक विस्तृत किया जा सकता है लेकिन शक्ति समय व श्रम के बचत के लिए अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन में दौसा जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।
- प्रस्तुत शोध में उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों का चयन किया गया।
- हिन्दी भाषा में उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियों का अध्ययन करने के लिए तालव्य वर्ण, मूर्धन्य वर्ण, विसर्ग वर्ण एवं सयुंक्त वर्ण तक सीमित रखा गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरः

1 **स्वतंत्र चरः** उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी सभी स्वतंत्र चर हैं।

2 **आश्रित चरः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में हिन्दी में उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी आश्रित चर हैं।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, प्रमाप विचलन, एवं टी मूल्य ज्ञात करने के लिए टी परीक्षण [4] इत्यादि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण, सारणीयन, व्याख्या एवं आरेखीय निरूपणः

प्रस्तुत शोधकार्य में भी अंकन से प्राप्त प्रदत्तों को व्यवस्थित करके तालिकाबद्ध किया गया है। इस हेतु निम्नलिखित तालिका बनायी गई है, जिसका वर्णन निम्नानुसार है।

H_{01}: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या 1: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों को प्रर्दशित करने वाली तालिका का विश्लेषण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मूल्य	सार्थकता का अन्तर	निष्कर्ष
पुरूष विद्यार्थी	300	415.16	29.10	0.161	0.730	आसार्थक	स्वीकृत
महिला विद्यार्थी	300	413.61	38.86	0.214			

स्वतंत्रता के अंश (df) 598 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 पर स्तर पर तालिका मान = 1.96

आरेख संख्या 1: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों को प्रदर्शित करने वाला आरेखीय निरूपण

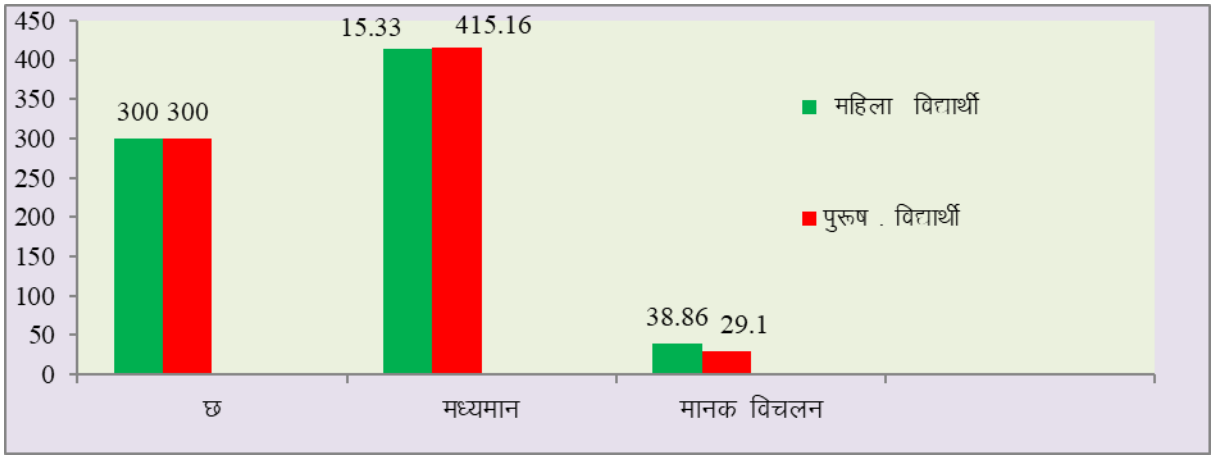

विश्लेषण एवं व्याख्याः

प्रस्तुत तालिका 1 एवं आरेखीय निरूपण संख्या 1 में महिला विद्यार्थियों एवं पुरूष विद्यार्थियों में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा की वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों से सम्बंधित अध्ययन पर प्राप्तांकों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि महिला समूह का मध्यमान 413.61, मानक विचलन 38.86 तथा मानक त्रुटि 0.161 पायी गयी है। पुरूष विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 415.16 मानक विचलन 29.10, तथा मानक त्रुटि 0.214 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 0.730 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंश 598 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.96 से कम है जो अन्तर की सार्थकता की पुष्टि नहीं करता है। अतः सरकारी विद्यालय

में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

H_{02}: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन की त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या 2: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन की त्रुटियों को प्रर्दशित करने वाली तालिका का विश्लेषण

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मूल्य	सार्थकता स्तर 0.05	निष्कर्ष
महिला विद्यार्थी	300	26.43	18.32	1.058	1.606	आसार्थक	स्वीकृत
पुरूष विद्यार्थी	300	24.66	4.99	0.288			

स्वतंत्रता के अंश (df) 598 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 पर स्तर पर तालिका मान = 1.96

आरेख संख्या 2: सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की हिंदी में वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन की त्रुटियों को प्रर्दशित करने वाली आरेखीय निरूपण

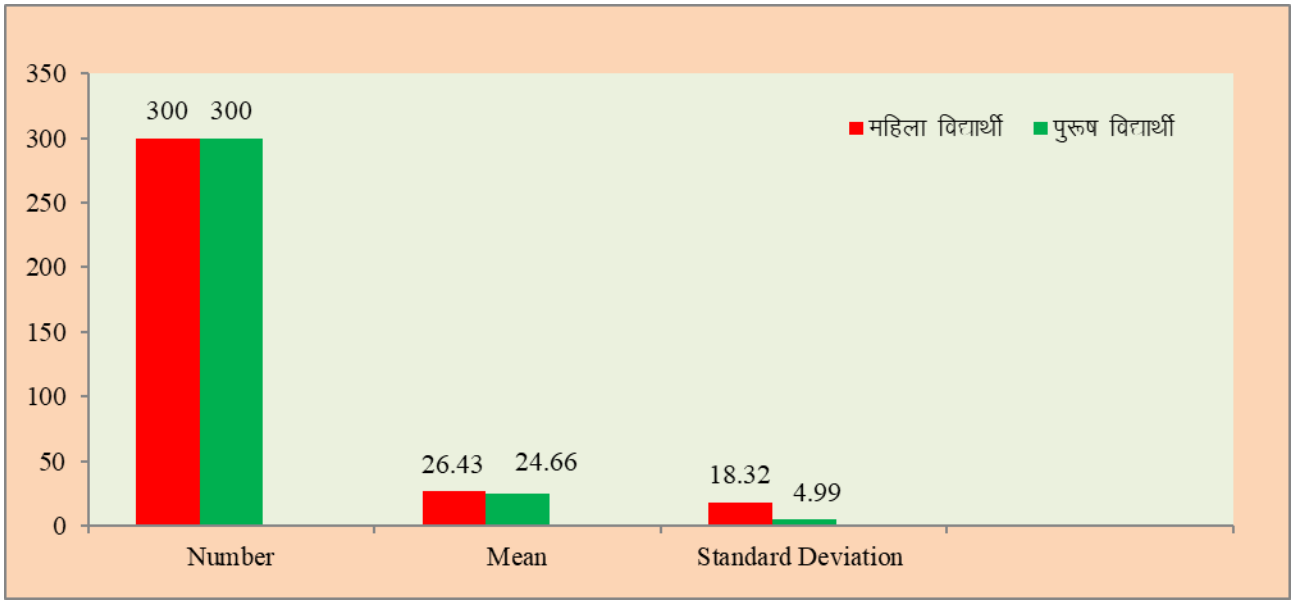

विश्लेषण एवं व्याख्या:

प्रस्तुत तालिका 2 एवं आरेख संख्या 2 में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की महिला विद्यार्थी एवं पुरूष विद्यार्थियों की मानक हिंदी की वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन की त्रुटियों के सम्बंध में अध्ययन पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि महिला विद्यार्थी समूह का मध्यमान 26.43, मानक विचलन 18.38, तथा मानक त्रुटि 0.375, पायी गयी है। पुरूष विद्यार्थी केसमूह का मध्यमान 24. 66, मानक विचलन 4.99, मानक त्रुटि 0.414, पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 1.606, पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंश 598 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.96 से कम है जो अन्तर की सार्थकता को प्रमाणित नहीं करता है। अतः परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की महिला विद्यार्थी एवं पुरूष विद्यार्थियों की मानक हिंदी की वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन

की त्रुटियों के सम्बंध में महिला एवं पुरूष वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षण लेखन विसर्ग संबंधी में कोई सार्थक अंतर नहीं है पाया जाता है। अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

शोध के निष्कर्ष:

निष्कर्ष 1: उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा की वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है जो तथ्यात्मक तथा सांख्यिकी विश्लेषण में अन्तर की सार्थकता की पुष्टि नहीं करता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'हिंदी भाषा' के उपयोगिता के संदर्भ में प्रतिबद्धता' के सम्बंध में महिला विद्यार्थी एवं पुरूष विद्यार्थियों में अध्ध्यन के दौरान हिन्दी भाषा के प्रति आन्तरिक स्वीकृति, अध्ध्यन के प्रति रूचिपूर्ण उत्तरदायित्व, आधारभूत हिन्दी भाषा के मूल्यों में निष्ठा एवं देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व व विकास में महिला विद्यार्थियों के समूह की पुरूष विद्यार्थियों की तुलना में न्यून अन्तर पाया गया है [5]। क्योंकि अध्ध्यन अध्यापन भाषा की दक्षता अनुभव और अभ्यास व प्रशिक्षण के साथ सुधरती जाती है तथा विद्यार्थियों में अपने अध्ययन में हिन्दी भाषा के उच्चारण व लेखन कौशल में समानरूप से अपने अध्ययन के प्रति आन्तरिक स्वीकृति, अध्ययन के प्रति उत्तरदायित्व, आधारभूत व्याकरण विधा में समान नियमों की समान जानकारी में निष्ठा एवं अध्ययन के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व में महिला विद्यार्थियों के समूह की पुरूष विद्यार्थियों की तुलना में न्यून अन्तर पाया गया है। इस विकासात्मक अवधारणा में उनके अध्ययन, अध्यापन के लिए दोनों समूह को ज्ञान के प्रति रूचि से वर्तमान शिक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम व नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का समान उपयोग करने के कारण व उनकी अकादमिक विषयों के अध्ध्यन में विशेषरूचि एवं शैक्षिक सफलता या हिन्दी उच्चारण में दक्षता में बड़ा कम अन्तर होना भी उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा की वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन की त्रुटियों में सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है।

निराकरण: उपरोक्त परिकल्पना के अनुसार प्राप्त तथ्यों से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा की वर्तनी वाले संयुक्त वर्ण संबंधी लेखन के समय होने वाली त्रुटियों के संदर्भ में यह निराकरण किया जाता है कि इस स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा के प्रति रूचि जाग्रत करना आवश्यक है साथ ही उनको भाषा विशेषज्ञों के द्वारा अध्यापन कराते समय हिन्दी भाषा की लिपि का पूरा ज्ञान कराना आवश्यक है जिससे उनको ज्ञान के विकास में मजबूत आधार मिल सके जिससे वे अपनी बोलचाल, लेखन में होने वाली अशुद्धताओं को दूर किया जा सके।

निष्कर्ष 2: उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की महिला विद्यार्थी एवं पुरूष विद्यार्थियों की मानक हिंदी की वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन की त्रुटियों के सम्बंध में महिला एवं पुरूष वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षण लेखन विसर्ग संबंधी में कोई सार्थक अंतर नहीं है पाया जाता है। अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। जो तथ्यात्मक तथा सांख्यिकी विश्लेषण में अन्तर की सार्थकता को प्रमाणित नहीं करता है। परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षण लेखन कौशल हिन्दी वर्तनी संबंधी त्रुटियों व अशुद्धियों के रूप में त्रुटियों के कई कारण हो सकते हैं जैसे– वर्तनीगत सर्वमान्य एक रूपता का अभाव, व्याकरणीय रूपों की अनभिज्ञता आदि इसी प्रकार शैक्षिक कारण जैसे – लिपि का अधूरा ज्ञान, अभ्यास की कमी होना, अध्यापकों की त्रुटियों के प्रति उदासीनता आदि अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अतः नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का समान उपयोगिता से हिन्दी भाषा संबंधी त्रुटियों को कम करने के कारण दोनों समूह में समान लेखन दक्षता पायी गई है। अतः उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानक हिंदी की वर्तनी वाले विसर्ग संबंधी लेखन की त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

निराकरण संबंधी निष्कर्ष: विद्यार्थियों की मानक हिंदी की वर्तनी संबंधी लेखन की त्रुटियों के सम्बंध उपचार के लिए यह मार्गदर्शन प्रदान किया गया है कि वर्तनी की अशुद्धियॉ कई प्रकार से हो सकती

है। यह मात्राओं की अशुद्धि, स्वरों की अशुद्धि, कारकों की अशुद्धि, व्यजंन की अशुद्धि, समास की अशुद्धि, सधि के आधार पर अशुद्धि, हलन्त के आधार पर अशुद्धियॉ। इस प्रकार विद्यार्थियों की विसर्ग संबंधि अध्ययन में ज्ञात हुआ कि अनेक ऐसे शब्द होते हैं, जहॉ पर विसर्ग का प्रयोग किया जाता है। अधिकतर विसर्ग का प्रयोग संस्कृत में किया जाता है लेकिन हिन्दी भाषा में भी शब्दों के साथ विसर्ग का प्रयोग किया जाता है।

शोध की शैक्षिक उपादेयताः

मानव मन के विकास की आधार शिला भाषा है। यह मनुष्य के सांस्कृतिक मानसिक, समाजिक विकास में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भारत की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव किये हैं [6]। जिनमें से एक त्रि–भाषा नीति है। यह नीति आधारभूत स्तर पर तीन भाषाओं को सीखने के महत्व पर जोर देती हैः मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी और अग्रेंजी। इस नीति का उद्देश्य छात्रों में बहुभाषा वाद और सांस्कृतिक जागरूकता को बढावा देना है, जिससे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर समझ और संचार को बढावा मिले। आज वैश्विक युग में शिक्षा की प्रभावशीलता समाज और राष्ट्र में उसकी उपयोगिता उसके संवैधानिक व शैक्षिक सिद्धान्तों में सन्निहित है। शिक्षा मानव समाज में मेरूदण्ड है। यह हर युग में मानव की मलिनता को धोकर उज्ज्वलता प्रदान करती है। यह निर्विवाद एवं विवेकपूर्ण तथ्य है कि शिक्षा में शिक्षा का मूल अधिकार सर्वजन हिताय है। अधुनातन तथ्यों एवं अनुसंधानों के आधार पर इसका विश्लेषण किया जाये ताकि वैश्वीकरण के युग में शिक्षा द्वारा वर्तमान चुनौतियों को लेते हुए शिक्षा एक नवीन संदर्भ में उभर कर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व सांस्कृतिक क्रांति लाने में सक्षम हो सके। अध्यापक शिक्षा मानवीय व्यवहार संबंध की व्यवस्था है। इसे प्रभावशाली ढ़ंग से लागू कर उसके परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम हो सके। शोधकर्ता द्वारा किये गये गहन अध्ययन और शोध निष्कर्ष के अनुसार, वर्तमान अध्ययन शिक्षक और प्रशिक्षक, शैक्षिक योजनाकार और प्रशासन, नीति निर्माताओं और शिक्षकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उपयोगी रहेगा।

सन्दर्भः

1. चौधरी, यू. एस. (1976). "एन इवैल्यूएशन ऑफ नेशनलाइज्ड हिन्दी टेक्स्ट बुक्स ऑफ मध्यप्रदेश," पीएच.डी. थीसिस, इंदौर विश्वविद्यालय, पृष्ठ संख्या 38–40.
2. हेमा और शाह, ए. के. (2023). "हिन्दी व्यंग्य निबन्ध साहित्य का भाषा एवं शैली वैज्ञानिक अनुशीलन," शिक्षा प्रकाशन, बड़ौदा, पृष्ठ संख्या 59–64.
3. मिश्रा, जे. एन. (2024). "माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षण में समस्याएँ व कठिनाईयों पर अध्ययन," लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एण्ड सन्स प्रकाशन, रोहतक, पृष्ठ संख्या 34–39.
4. अस्थाना, वी. (2001). "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन," रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ.
5. आलतेकर, ए. एस. (2008). "प्राचीन भारत में शिक्षा, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर," पृष्ठ संख्या 13–15.
6. अग्रवाल, जे. सी. (2010). "शिक्षा मनोविज्ञान," शिप्रा पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, पृष्ठ संख्या–273–289.